ि ाक्षा से विद्यार्थी का भावनात्मक विकास महत्वपूर्ण : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़ : 20 जनवरी 2011

राश्ट्रसंत आचार्य महाश्रमण ने ि ाक्षक एवं विद्यार्थी को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यालय सरस्वती के मंदिर है। जिनमें ज्ञान की आराधना होती है। उन्होने कहा कि आज ि ाक्षा के प्रति सरकार भी जागरूक है। जगह–जगह स्थापित ि ाक्षण संस्थाएं इस जागरूकता का प्रमाण है। परन्तु आज ि ाक्षा व्यापार में परिवर्तित हो रही है व अर्थ भी कमा रही है। सदाचार के निर्माण का कार्य ि ाक्षण संस्थाओं में होना चाहिए। अभिभावकों की तीन उम्मीदें होती है कि बच्चा ि ाक्षा ग्रहण करेगा तो ज्ञान बढ़ेगा, वह आत्मनिर्भर होगा व सुसंस्कारों से सम्पन्न होगा।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि गुरूदेव तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ जी ने ि ाक्षा जगत के लिए सपना संजोया था कि बच्चों को बचपन से ही अच्छी ि ाक्षा मिले। जीवन विज्ञान का घ्येय भावात्मक विकास होना चाहिए। बुद्धि के द्वारा समस्याओं का समाधान होता है। वह बुद्धि श्रेश्ठ है जो वीतराग–धर्म के मार्ग पर चलने व श्रेश्ठ कार्य करने की प्रेरणा दे। वह बुद्धि किस काम की जो पापाचार करे। भाुद्ध बुद्धि कामधेनु के समान है, बुद्धि का स्वस्थ होना जरूरी है। योग साधना के बिना भावना अच्छी नहीं होती तो बुद्धि भी ठीक नहीं रहती। भावना का विकास नहीं है तो मोहग्रस्त व्यक्ति को भाांति नहीं मिलती।

आचार्य महाश्रमण ने बताया कि ज्ञान के समान कोई पवित्र वस्तु नहीं है। ज्ञानरूपी नौका में बैठकर व्यक्ति पापरूपी सागर को पार कर सकता है। ज्ञान एक तलवार भी है जो अज्ञान को काटती है। भारतीय वांग्मय में ज्ञान का भण्डार पड़ा है। श्रीमद्भागवत गीता की भी चर्चा करते हुए कहा कि आत्मा भाा वत है, सनातन है।

इससे पूर्व मुनि कि ानलाल ने कहा कि श्रेश्ठ व्यक्ति का निर्माण करना है तो ि ाक्षा के साथ जीवन विज्ञान जोड़ना है। मूल्यपरक ि ाक्षा ही जीवन विज्ञान है। ि ाक्षा के साथ भावात्मक विकास हो, चारित्रिक मूल्यों का विकास हो। जीने का व्यवस्थित ज्ञान ही जीवन विज्ञान है। लंबे प्रवास से पधारे मुनि श्री रविन्द्र कुमार जी व साध्वीश्री सुमनश्री जी ने अपने प्रासांगिक विचार प्रस्तुत किये।

सम्मेलन को ब्लॉक ि ाक्षा अधिकारी संदीप व्यास, जिला ि ाक्षा अधिकारी ओमप्रका ा जांगिड़, भारतीय ि ाक्षण मंडल के वैद्य बालकृश्ण गोस्वामी, ि ाक्षाविद् चम्पालाल उपाध्याय ने संबोधित किया।

इस अवसर पर पधारे राजस्थान सरकार के चिकित्सा राज्यमंत्री डॉ. राजकुमार भार्मा ने कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मुझे आचार्य महाश्रमण का आ ीर्वाद प्राप्त हुआ है। आज गुरू ि ाश्य परंपरा को पुर्नजीवित करने की आव यकता है। चिकित्सा राज्य मंत्री जी का अभिननदन श्री कमल दूगड़ ने किया।

भारतीय ि ाक्षण मंडल व गजानन्द लाहोटी एज्यूके ान ट्रस्ट की ओर से भामा ााह सम्मान प्राप्त नगर सेठ श्री तुलाराम जालान के प्रतिनिधि ओमप्रका ा तापड़िया एवं श्री डालमचन्द बैद को, भामा ााह प्रेरक सम्मान प्राप्त ि ाक्षाविद चम्पालाल उपाध्याय एवं कुलदीप व्यास को, राज्यस्तरीय ि ाक्षक सम्मान प्राप्त अम्बिकाप्रसाद भार्मा व सु ाील भार्मा को अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन कुलदीप व्यास ने किया।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+91 9831017467
rs_dugar@yahoo.com